International Journal of Education and Science Research
Review
E-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org June- 2015, Volume-2, Issue-3 Email- editor@ijesrr.org

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक व व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

[1]डॉ0 सुरक्षा बंसल , [2]कृष्ण पाल
[1]शोध निर्देशिका, [2]शोधार्थी
[1],[2]शिक्षा संकाय
सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय
राय–भोई, जोरवाट, मेघालय

वर्ष 1952–53 में माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा 1964–66 में कोठारी आयोग की स्थापना से माध्यमिक शिक्षा के लिए ठोस कार्य की शुरूआत हुई। कोठारी आयोग की सिफारिश के आधार पर देश की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 तैयार की गयी। आयोग द्वारा ऐसे बहुउद्दशीय विद्यालयों की स्थापना की संस्तुति भी की गयी जो माध्यमिक स्तर पर प्रौद्योगिकी, कृषि, वाणिज्य, ललित कलाओं और गृह विज्ञान आदि में अधिक से अधिक पाठ्यक्रम उपलब्ध करा सकें। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण देश के लिए राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली विकसित करने पर जोर देते हुए पूरे देश में 10+2+3 शिक्षा पद्धति की सिफारिश की गयी। वर्ष 1986 में देश में दूसरी शिक्षा नीति घोषित की गयी। जिसमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था निर्धारित की गयी जिसमें प्रत्येक पॉच वर्ष के बाद प्रचलित शिक्षा प्रणाली के निर्धारित पाठ्यक्रम, परीक्षा एवं मूल्यांकन के तरीकों, शिक्षण विधियों आदि पर विचार–विमर्शकर सुधार किया जायं और आवश्यकतानुसार इसे नया रूप भी प्रदान किया जायं। इसी सुझाव के आधार पर 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति और इसकी कार्ययोजना तथा 1986 की शिक्षा नीति का पुनः परीक्षण भी किया गया। आगे आने वाले वर्षों में भी इसी प्रकार इसे परिमार्जित और परिवर्द्धित करने के लिए इसी तरह के प्रयास किए जाते रहेंगे ऐसी सम्भावना भी है।

आधुनिक माध्यमिक शिक्षा की शुरूआत वुड के घोषणापत्र 1854 के बाद हुई। जब हमारा देश स्वतन्त्र हुआ उस समय 1947 में हमारे देश में लगभग 12000 माध्यमिक विद्यालय चल रहे थे। स्तर से नीचे के विद्यालय बन्द करने में इनकी संख्या घटकर लगभग 6000 रह गई। परन्तु साथ–साथ कुछ नए माध्यमिक विद्यालय भी खोले गए जिनके परिणामस्वरूप 1951 में इनकी संख्या बढ़कर 7000 से अधिक हो गयी। 1954 से हमारे देश में योजनाबद्ध विकास कार्य शुरू हुआ। परिणामस्वरूप 50–60 के दशक में लगभग 10,000, 1960–70 के दशक में लगभग 20,000, 1970–80 के दशक में लगभग 10,000 तथा 1980–90 के दशक में लगभग 28000 माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी। 2001 में देश में लगभग 1,26,000 माध्यमिक विद्यालय थे और इनमें लगभग 280 करोड़ विद्यार्थी अध्ययनरत थे। 2007–08 में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बढ़कर लगभग 1,73,000 हो गयी और इनमें पढ़ने वालों की संख्या बढ़कर लगभग 4.5 करोड़ हो गयी। वर्तमान में माध्यमि विद्यालयों की संख्या लगभग 1.9 करोड़ होगी और इनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग 5 करोड़ होगी। परन्तु चौंकाने वाला तथ्य यह है कि इस समय 14–18 आयु वर्ग के लगभग 7.5 करोड़ बच्चे माध्यमिक शिक्षा से बाहर हैं। यूँ देश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह प्रसार सन्तोषजनक माना जा सकता है। परन्तु 10+2+3 शिक्षा संरचना के दर्शन की दृष्टि से यह बहुत कम है, इसका अभी और प्रसार करना है और साथ ही इसका स्तर भी उठाना है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर–

''बालक के संज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ आकांक्षाओं का निर्माण होने लगता है। ये आकाक्षांए शिक्षा द्वारा पुष्ट होती हैं और शैक्षिक आकांक्षा में बदल जाती हैं। अतः शैक्षिक आकांक्षा का व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। दूसरे शब्दों में शिक्षा के विषय में जानना, जानने की इच्छा रखना, शिक्षा के स्वरूप को समझना तथा उसके प्रति रूचि, अभिवृत्ति और शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा ही शैक्षिक आकांक्षा है।'' प्रायः छात्र व छात्राएं जिन वस्तुओं की इच्छा रखते है। वही उन्हें प्राप्त होती है। बालक के मन में पहले इच्छा आती है, जो बाद में आकांक्षा के रूप में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार शिक्षा को जानना, पहिचानना एवं प्राप्त करने की इच्छा रखना ही शैक्षिक आकांक्षा है।

अतः हम शिक्षा को जानने, पहचानने एवं प्राप्त करने एवं उसके उपरांत परिणामों के बारे में जानने की इच्छा को पूरा करने के लिए जिस स्तर तक प्रयास करते हैं अथवा सफल होते हैं, उसे शैक्षिक आकांक्षा स्तर कहते हैं।

व्यवसायिक आकांक्षा स्तर–

विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा भी अपना महत्व रखती है। क्योंकि अधिकांश बालक वही बनना पसन्द करते है, जो उनके अभिभावक चाहते है अथवा वे स्वयः बनना चाहते है। माता–पिता अपने बच्चों के लिए ऐसा व्यवसाय चाहते है, जो सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित हो तथा उनके बच्चे उनसे ऊंचा स्थान प्राप्त करें।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद–

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश राज्य में स्थापित कक्षा 6से कक्षा 12 तक के विद्यालयों को मान्यता प्रदान करने तथा परीक्षा सम्पन्न कराने वाली संस्था है। इसे संक्षेप में यू0पी0बोर्ड के नाम से भी जाना जाता है। जिसका मुख्यालय इलाहाबाद में है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद–

यह एक केन्द्रीय सरकार के अधीन कार्य करने वाली संस्था है। जोकि भारतवर्ष के किसी राज्य में उच्चतर माध्यमिक स्तर तक के विद्यालयों को मान्यता प्रदान करती है एवं उनकी परीक्षा सम्पन्न कराती है। जिसका मुख्यालय दिल्ली में स्थित है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों से तात्पर्य ऐसे छात्रो से है, जो कि दोनों परिषद् के विद्यालयों में कक्षा 12 में अध्ययनरत् है।

अध्ययन का औचित्य–

सन्दर्भ साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं, कि अभी तक शैक्षिक आकांक्षा स्तर व व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर जो भी अध्ययन हुए है। वह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो पर सामान्य अध्ययन हुए है तथा समायोजन चर पर दृष्टिबाधित, सामान्य, मूक–बधिर, अनुसूचित जाति एवं जनजाति पर तुलनात्मक अध्ययन हुए है। शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययन अन्य मनोवैज्ञानिक चरों के संदर्भ में सम्पादित हुए है। जिन्हें सम्बन्धित शोध साहित्य सर्वेक्षण में उल्लेखित किया गया है। लेकिन उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शैक्षिक व व्यवसायिक आकांक्षा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुए है। इसलिये प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई है। उसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोध समस्या को शब्दों में सीमांकित करते हुए शोध प्रकरण का प्रतिपादन किया है।

शोध अध्ययन का शीर्षक–

''उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक व व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन''

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना करना।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर की तुलना करना।
3.

शोध परिकल्पनाये–

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् व केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् व केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
3.

शोध अध्ययन की जनसंख्या–

मेरठ मण्डल के सभी जनपदों के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में उच्चतर माध्यमिक स्तर (कक्षा–12) पर अध्ययनरत् समस्त छात्रों को प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श की चयन विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मल्टी स्टेज सैम्पल विधि का प्रयोग किया गया है। प्रथम स्टेज में मेरठ मण्डल के समस्त जनपदो में से चार जनपदो का लॉटरी मैथड से चयन किया गया। द्वितीय स्टेज में चारो जनपदो के समस्त उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यालयों की सूची में से लाटरी मैथड से जनपदवार 6–6 विद्यालयों का चयन किया। तत्पश्चात् तृतीय स्टेज में चयनित विद्यालयों में से प्राप्त छात्रों की सूची में से टिप्टस टेबल के द्वारा छात्रो का चयन किया गया है। न्यादर्श का आकार प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 500 छात्रों (250 छात्र उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यालयों से एवं 250 छात्र केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यालयों से) का चयन किया गया है।

अनुसन्धान विधि–

प्रस्तुत शोध की प्रकृति वर्णनात्मक अनुसन्धान की है। अतः वर्तमान शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर–

1. स्वतन्त्र चर : (अ) उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् (ब) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद
2. आश्रित चर : (अ) शैक्षिक आकांक्षा स्तर (ब) व्यावसायिक आकांक्षा स्तर।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

1. शैक्षिक आकांक्षा मापनी डॉ वी0पी0 षर्मा एवं डॉ0 अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित एवम् प्रमापीकृज शैक्षिक आकांक्षा मापनी का हिन्दी रूपान्तर प्रयोग किया है।
2. व्यवसायिक आकांक्षा मापनी डॉ0 जे0एस0 ग्रेवाल सेवानिवृत्त आचार्य, शिक्षा विभाग रीजनल कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन भोपाल द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत व्यवसायिक आकाँक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय–

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, एस0डी0, प्रतिशतता, एन0पी0सी0, टी–अनुपात, टी–स्कोर नार्मस, आयत चित्र आदि सांख्यिकीय विधियो का प्रयोग किया गया है। शोध निष्कर्ष–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के छात्रों से अधिक हैं।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के छात्रों से अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ–

1. शोधार्थियों के लिए–

वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा–शास्त्र विषय में शोध अध्ययन करने वाले शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस विषय के अन्तर्गत शोध करने वाले शोधार्थी प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणामों को आधार मानकर समस्या के अन्य पहलुओं पर नूतन शोध प्रारम्भ कर सकते है।

2. बोर्ड या परिषद् के अधिकारियों के लिए–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष बोर्ड के अधिकारियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगे। शोध निष्कर्षों के आधार पर विभिन्न बोर्ड के अधिकारी व्यवसायिक शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों का निर्माण करा सकेगें। जिससे छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा को उचित दिशा व दशा प्रदान की जा सके। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठयक्रमों का निर्माण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाये कि व्यवसायिक पाठ्यक्रम कार्यानुभव आधारित हो। जिससे उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व व्यावसायिक आकांक्षा का उन्नयन किया जा सके।

3. शिक्षा अधिकारियों व प्रशासकों के लिए–

प्रस्तुत शोध के अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद व केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में अध्ययनरत् उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षा स्तर, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की गयी है। इसके आधार पर प्रशासक यह जान सकते है कि किस परिषद के छात्रों की शैक्षिक व व्यवसायिक आकांक्षा का स्तर कैसा है? उनका समायोजन का स्तर कैसा है? तथा किस बोर्ड के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि किस स्तर की है? इन परिणामों को दृष्टिगत रखते हुये शैक्षिक व व्यवसायिक उन्ययन के लिए प्रभावी, कार्य योजनाओं का विद्यालयों में क्रियान्वयन कराकर शिक्षकों व छात्रों को सहायता प्रदान कर सकते है।

4. प्रधानाचार्यों के लिए–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम स्कूलों के प्रधानाचार्य के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगे। इस शोध के आधार पर उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा केन्द्रीय, माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के प्रधानाचार्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की गृह, समाज, स्वास्थ्य संवेगात्मक तथा स्कूल समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर विद्यालय स्तर पर शैक्षिक व समायोजन सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए समस्या निवारण प्रकोष्ठ बना सकते है। जिसके माध्यम से स्कूल स्तर पर छात्रों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं तथा भावी शैक्षिक योजनाओं का क्रियान्वयन कर सकते है।

5. अभिभावकों के लिए–

प्रस्तूत शोध के अध्ययन के परिणाम उच्चतर माध्यमिक स्तर के समस्त छात्रों के अभिभावकों के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी। शोध निष्कर्ष के आधार पर अभिभावक, व्यवसाय चयन हेतु अपने बच्चों का मार्गदर्शन कर सकेंगे। बच्चों के गृह, समाज, स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक तथा स्कूल

समायोजन की वस्तु स्थिति का संज्ञान लेकर उन्हें सुसमायोजित कराने का प्रयास कर सकते है। इसके अलावा अपने बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को जान कर उसके उन्नयन के लिये समुचित प्रयास कर सकते हैं।

6. विद्यार्थियों के लिये–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् समस्त छात्रों के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे। शोध निष्कर्षो के आधार पर छात्र अपनी रूचि के अनुरूप विषय व व्यवसाय का चुनाव कर सकते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये उचित शैक्षिक व व्यवसायिक विषय का चुनाव कर लाभान्वित हो सकेंगे। कुसमायोजित या असमायोजित छात्र, विद्यालयों में समायोजित होकर अपनी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर के साथ–साथ शैक्षिक आकांक्षा को बढ़ा सकते हैं।

7. परामर्शदाताओं के लिये–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम परामर्शदाताओं के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे। इसके आधार पर वे छात्रों का वांछित व्यवसाय के लिये वांछित विषय का चयन करने के लिये निर्देशन और परामर्श दे सकेंगे। इसके अतिरिक्त इस शोध अध्ययन के परिणामों से छात्रों को स्कूल या घर पर होने वाली समायोजन सम्बन्धी समस्या के निराकरण हेतु उचित परामर्श दे, समस्या के समाधान हेतु सक्षम बना सकते है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

आस्थाना, विपिन शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकीय, आगरा, ज्योति प्रिन्टिंग प्रैस–2008।
भटनागर सुरेश शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर0लाल0बुक डिपो–2004।
भटनागर सुरेश भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठ, आर0लाल0बुक डिपो–2006।
गुप्ता एस0पी0 आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन–2008।
गुप्ता एस0पी0 व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियॉ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन–2008।
निवलैट एम0 आर0 'एजूकेशन एण्ड दा मॉडर्न माईण्ड' फेवर एण्ड फेवर, प्रथम संस्करण–1954।
महमूद जाहिद स्टूडेन्ट मेन्टल हेल्थ ए पाइलेट स्टडी, काउन्सिलिंग साइकोलॉजी, क्वार्टरली, जून–1999।